HAPPY SCHOOL

Volume 3 - Issue 2, JULY 2020

A Bi-annual Magazine of

Government Model Primary School Ganga Bhogpur

Yamkeshwar – Pauri Garhwal

पत्रिका के बारे में

"हैप्पी स्कूल" राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय गंगा भोगपुर द्वारा प्रकाशित एक ऑनलाइन पत्रिका है. इस पत्रिका का उद्देश्य विद्यार्थियों व अध्यापकों में छुपी हुई लेखन प्रतिभा को उजागर कर समाज तक पहुंचाकर एक संवाद प्रक्रिया को जागृत करना है. पत्रिका में प्रकाशित समस्त विचार लेखकों के अपने हैं. अतः यह आवश्यक नही है कि प्रत्येक लेख में विद्यालय या सम्पादक मंडल अपने विचारों को प्रस्तुत कर रहें हों.

©2018, पत्रिका में प्रकाशित लेखों का रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित है. बिना किसी पूर्व लिखित अनुमति के लेखों का पुनर्मुद्रण किसी भी रूप में मान्य नही होगा.

सलाहकार समिति

समन्वयक – प्रदेश परियोजना कार्यालय
ड़ा. के.एल. बिजल्वाण
जिला शिक्षा अधिकारी - प्राथमिक शिक्षा
श्री कुंवर सिंह रावत
खंड शिक्षा अधिकारी – यमकेश्वर
श्री अमित कोटियाल
संकुल समन्वयक - नीलकंठ
श्री नरेन्द्र प्रसाद कैंथोला
प्रधानाध्यापक - रा.आ.प्रा.वि. गंगा भोगपुर
श्रीमती लक्ष्मी पोखरियाल

सम्पादकीय समिति

अकादमिक सम्पादक
ड़ा. अतुल बमराड़ा
मुख्य सम्पादक
रेखा पुरोहित
सम्पादक
आशा बिष्ट
सह-सम्पादक
धनेश्वरी रतूड़ी

खंड शिक्षा अधिकारी कार्यालय
यमकेश्वर – पौड़ी गढवाल

दिनांक: 20/05/2020

संदेश

अपार हर्ष का विषय है कि राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय गंगा भोगपुर द्वारा "हैप्पी स्कूल" विद्यालय पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है. इस अवसर पर मै समस्त विद्यालय परिवार को शुभकामनायें प्रेषित करता हूँ.

प्रत्येक बच्चा कहीं परिवार में, कहीं समाज में, कक्षा में विविध प्रकार की शिक्षाओं से घिरा होता है तथा उन्हें शिक्षित करने के बहुआयामी तरीके उन्हें नवाचारी बनाने की ओर अग्रसर करते हैं. हैप्पी स्कूल पत्रिका भी इसी क्रम में किया गया एक नवाचारी प्रयोग ही है जो कि बच्चों को स्वनिर्मित कहानी, कविता, चुटकले, पहेलियाँ आदि बनाने के लिए एक मंच प्रदान करता है. पत्रिका का एक भाग अध्यापक वर्ग को भी लेखन कला की ओर अग्रसर कर एक अवसर प्रदान करता है, जिसके माध्यम से वह अपने विचारों को जनमानस तक प्रेषित कर सकें व भविष्य में भी यह साहित्य प्रयोग में लाया जा सके.

अल्प संसाधनों का प्रयोग कर हैप्पी स्कूल पत्रिका का निर्माण किया गया है जिसे कि विभिन्न तकनीकी माध्यमों द्वारा डाउनलोड किया जा सकता है. पत्रिका तक पाठक वर्ग की आसान पहुँच विद्यालय व् सम्पादक मंडल की दूरगामी सोच को प्रदर्शित करती है.

मै विद्यालय के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ व साथ ही समस्त अध्यापकों को भविष्य में भी इसी प्रकार के नवाचारी प्रयोग करने का आह्वान करता हूँ.

श्री शैलेन्द्र अमोली

खंड शिक्षा अधिकारी, यमकेश्वर पौड़ी गढ़वाल

सम्पादकीय

शिक्षा का अर्थ केवल वस्तुओं या विभिन्न विषयों का ज्ञान मात्र नहीं है। यदि अर्थ को यहीं तक सीमित मान लिया जाये तो वह अज्ञान से कुछ ही अधिक हो सकता है और कई बार तो उससे भी अधिक भयावह परिणाम प्रस्तुत कर सकता है। ज्ञान की अथवा शिक्षा की सार्थकता वस्तुओं के ज्ञान के साथ-साथ अनुपयोगी और उपयोगी का विश्लेषण करने तथा उनमें से अनुपयोगी को त्यागने एवं उपादेय को ग्रहण करने की दृष्टि का विकास भी होना चाहिए। तभी शिक्षा अपने सम्पूर्णता को प्राप्त होती है।

ज्ञान और आचरण में - बोध और विवेक में जो सामंजस्य प्रतुत कर सके उसे ही सही अर्थों में शिक्षा या विद्या कहा जा सकता है। जब यह सामंजस्य स्थापित नहीं हो पाता तो शिक्षा अधूरी ही कही जाएगी। आज के सन्दर्भ में देखें तो शिक्षा पद्धति इसी तरह की प्रवंचनाओं से पूर्ण है। छात्रों के सामने परीक्षा पास करने और डिग्री हासिल करने के अलावा कोई दूसरा लक्ष्य नहीं रहता। फलतः वह अपनी सभी प्रवृत्तियों का केन्द्र परीक्षा पास करना बना लेता है और जब यहीं एकमात्र लक्ष्य रह जाता है तो व्यक्तिव के अन्य पहलुओं पर स्वाभाविक ही विशेष ध्यान नहीं जाता। या यों भी कह सकते हं कि अन्य पक्ष गौण हो जाते हैं।

इस स्थिति में जीवन-विकास की आधारशिला, नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठा की जड़ें हिल जाना स्वाभाविक है। सर्वग्राही अनैतिकता के मूल में यदि शिक्षण पद्धति का यह दोश देखा जाए तो कोई अनुचित न होगा और जब सारे समाज के लगभग सभी वर्ग नैतिक मूल्यों की अवहेलना कर अनैतिकता का वातावरण विनिर्मित कर रहे हों तो छात्रों में नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठा पर दोहरी चोट पड़ती है।

इस स्थिति के लिए विद्यार्थी इतने दोषी नहीं हैं, जितनी कि शिक्षा-पद्धति। प्रचलित शिक्षण-पद्धति छात्रों के सामने कोई ध्येय, कोई आदर्श उपस्थित नहीं कर पाती या कहना चाहिए वह ध्येयहीनता के अंधकार में धकेलती है तो उस स्थिति में जो ज्ञान जीवन को सुसज्जित और सुरक्षित बनाता है वह ज्ञान कहाँ उपलब्ध हो पाता है? कहा जा चुका है कि शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्तित्व का समग्र विकास है। शिक्षा इसी उद्देश्य की ओर जरा भी उन्मुख हो तो ध्वंस की अपेक्षा सृजन की प्रेरणा ही जागेगी और ध्वंस का आयोजन करना भी पड़े तो वह सृजन की पृष्ठभूमि निर्मित करने के लिए ही अनिवार्य होगा।

इस संदर्भ को स्मृति में रखने के लिए प्रचलित शिक्षा-पद्धति में आवश्यक सुधार करना ही एकमात्र उपाय है और वह सुधार इस सिद्धाँत को केन्द्रों में रखते हुए ही सम्भव है कि शिक्षा का उद्देश्य कोई सूचनाएं या जानकारियाँ देना मात्र नहीं है, वरन् व्यक्तित्व का समग्र विकास करना है।

इस अंक में

छात्र परिशिष्ठ

कविता		
आओ पेड़ लगाएं	सोनम रावत	**3**
जल बरस	वैशाली	**3**
चारों और गणित	नंदिनी शर्मा	**4**
अनुभव आधारित कहानी		
हरिपुर का हाट	आर्यन शर्मा	**5**
हाथी महाशय	कृष्णा रणाकोटी	**6**
विंध्यवासिनी माता के दर्शन	शिवांशु रणाकोटी	**7**
राजाजी की सैर	श्रध्दा पोखरियाल	**8**
पहेलियाँ		
पहेलियों का संसार	प्रियांशु रावत	**9**
चित्रकला		

अध्यापक परिशिष्ठ

कविता		
पर्यावरण	आशा बिष्ट	**16**
आवाज	अनुराधा रयाल	**16**
बन्दर	माधुरी काला	**16**
गिनती	रत्ना गौड़	**17**
बेटी	कमला रावत	**17**
काश हमारे पंख होते	जय प्रकाश शाह	**18**
नानी	मनोज काम्बोज	**18**
बादलों की गूँज	रामेश्वरी रावत	**19**
छाए बादल	हेमलता काला	**19**
आपदा	रेखा पुरोहित	**19**
झम झम बूँदें	अंजना रतूड़ी	**20**
मेरी पेंसिल	धनेश्वरी रतूड़ी	**20**
अध्यापन में नवाचार		
विद्यालय की गतिविधियाँ		

छात्र उपलब्धि

आओ पेड़ लगाएं

सोनम रावत | कक्षा 3

चलो हम एक पेड़ लगायें
दुनिया को हरा भरा बनाएं.
चारों ओर फैलाएं हरियाली
सबके जीवन में लायें खुशहाली.
प्रदूषण ना फैले धरती पर
स्वर्ग से सुंदर हो सबका घर.

जल बरस

वैशाली | कक्षा 3

घड-घड नभ कडक-कडक
नहर-नहर, शहर-शहर
सब जगह, जल बरस
झम-झम झम-झम जल बरस
कमल मन हरस
सब तरफ जल बरस

झम-झम झम-झम
तड़-तड़ तड़-तड़
रह-रह कर जल बरस

चारों और गणित

नंदिनी शर्मा | कक्षा 3

गणित हंसाए गोलू को
गोलू खेले खेल
आओ हाथ मिलाएं इससे
गणित से कर लें मेल.
गणित से कर लें मेल
बनाये ABC की रेल
अ, आ, इ, ई और गिनती की
आओ बना लें बेल.
आओ बना लें बेल
सीखे गिनती जोड़ घटाना
गुना भाग से कर लो यारी
फिर ना करोगे ना ना ना.
फिर ना करोगे ना ना ना
गणित से सुलझेंगे बच्चे
ल.स., म.स., भिन्न, दशमलव
लगने लगेंगे अच्छे.
लगने लगेंगे अच्छे
कर लो गणित से पक्की यारी
देखो अपने इधर-उधर तुम
गणित है बिखरी सारी.

अनुभव आधारित कहानियाँ

हरिपुर का हाट

आर्यन शर्मा | कक्षा 4

मै गर्मी की छुट्टियों में हरिपुर गया था, जो कि हरिद्वार जिले में स्थित है. वहां पर मैंने बहुत सारे मन्दिर देखे, जिसमे कि एक मंदिर मुझे बहुत अद्भुत लगा. उस मन्दिर के संग्रहालय में कुछ समुद्री जानवरों को रखा गया था जो कि बहुत ही लुभावने थे. शाम के समय मै अपनी मौसी के साथ स्थानीय हाट में भी गया, जहां पर कि बहुत भीड़ थी. वहां पर मेले जैसे माहौल था. जहां एक ओर कुछ लोग खरीददारी करने में व्यस्त थे; वहीं दूसरी ओर कुछ अन्य लोग चाउमीन, टिक्की, मोमो, पकोड़े और जलेबी खाने में व्यस्त थे. मैंने भी वहां पर अपनी मौसी के साथ टिक्की खाई और उसके बाद अपनी बहिन के लिए खिलौने भी खरीदे. इस वर्ष भी मेरी माँ ने मुझे कहा है कि अगर मै अपनी कक्षा में प्रथम आया तो मुझे फिर से गर्मी की छुट्टियों में हरिपुर भेजेंगी.

हाथी महाशय

कृष्णा रणाकोटी | कक्षा 4

सर्दी का मौसम शुरू ही हुआ था. फसल की बुवाई के दो महीने बाद हमारे घर के पास वाले खेत में लगभग 6 बजे एक बड़ा हाथी आकर गेहूं की फसल खाने लगा. मेरे शोर मचाने पर हाथी महाशय को बहुत गुस्सा आ गया और चिंघाड़ते हुए हमारे घर के दरवाजे की ओर भागा और वहीं खड़ा हो गया. मै भयभीत हो गया और चुपके से खिडकी से हाथी को देखने लगा कि वह क्या कर रहा है. उस दिन मुझे एहसास हुआ कि हाथी बहुत ही चतुर जानवर होता है, क्योंकि जैसे ही मै खिडकी के पास पहुंचा - हाथी भी तुरंत खिडकी की तरफ लपका और एक पल को तो मुझे लगा कि हाथी मुझे खा ही जाएगा. उस दिन तो मुझे खिडकी में लगी सरियों ने बचा लिया. फिर मैंने हाथी महाशय को प्रणाम किया और हाथी महाराज सीधे राजाजी के जंगलों की ओर लौट गये.

विंध्यवासिनी माता के दर्शन

शिवांशु रणाकोटी | कक्षा 4

नवरात्रि के मौके पर मै अपने परिवार के साथ विंध्यवासिनी माता के दर्शन के लिए गया. वहां का नज़ारा बहुत ही मनमोहक था. चारों ओर लोग रंग-बिरंगे कपड़ों में माता रानी के दर्शनों के लिए दूर-दूर से आ रहे थे. रास्ते में जाते हुए मैंने हाथी, नीलगाय, हिरन और बाघ भी देखे. विंध्यवासिनी में चारों ओर पानी ही पानी दिख रहा था और यही पानी हमारे गाँव कौडिया में

आकर बीन नदी के रूप में जाना जाता है. फसलों के लिए यह पानी वरदान समान है क्योंकि हमारे गाँव की खुशहाली का राज यही पानी है; जिससे कि वर्ष भर खेतों को पानी की कोई भी कमी नही होती. वहां पहुँचने के बाद हम मन्दिर में गये जो कि बहुत ही ऊँचे स्थान पर था. माता रानी के दर्शन के बाद मैंने समस्त भक्तों को प्रसाद दिया और फिर मैंने अपने परिवार

के साथ नाश्ता किया. फिर कुछ देर वहां घूमने के बाद हम शाम को लगभग चार बजे घर के लिए लौटे. यह सफ़र मुझे बहुत अच्छा लगा.

राजाजी की सैर

श्रध्दा पोखरियाल | कक्षा 3

सितम्बर माह में हमे एक पृथ्वी कार्यक्रम के दौरान विद्यालय व WWF के द्वारा जंगल की सैर के लिए चीला ले जाया गया. चीला पहुँचने के बाद हमे वन-अधिकारियों व अध्यापकों के साथ राजाजी राष्ट्रीय उद्यान में लगभग 30 किमी अंदर गये. वहां पर हमने विभिन्न प्रकार के पशु – पक्षी व जीव-जन्तु भी देखे. मेरे लिए यह पहला मौका था जब मैंने हाथी, हिरन व नीलगाय को इतने पास से देखा. WWF के कार्यक्रम समन्वयक पंकज जोशी सर द्वारा हमे बाघ के पैरों के निशान भी दिखाए. उन्होंने हमे यह भी बताया कि दुनिया में जितने भी बाघ हैं उन सभी के पंजों के निशान अलग-अलग होते हैं; जिससे की उनकी गिनती करने में मदद मिलती है. मुझे जंगल का वातावरण बहुत अच्छा लगा. WWF द्वारा हमें लंच बॉक्स भी दिए गये. अतुल सर ने हमे बताया है कि इस वर्ष भी हमे जंगल की सैर पर ले जाया जाएगा, जिससे कि हम अपने पर्यावरण के बारे में ज्यादा जानकारियाँ प्राप्त कर सकें.

पहेलियों का संसार

प्रियांशु रावत | कक्षा 3

एक पक्षी ऐसा देखा,
ताल किनारे रहता था,
मुंह से आग उगलता था,
दुम से पानी पीता था (दिया बाती)
परकोटा तो हरा है,
भीतर लाल मकान,
चार-पांच नही कई हैं अंदर बैठे,
जैसे काले कोई जवान (तरबूज)
मै हूँ जल का विशाल भंडार,
नदियाँ करती मुझसे प्यार,
नमक है बनता मेरे जल से,
झट से नाम बताओ यार (समन्दर)
चार पैर की एक सवारी,
थके हुए को लगती प्यारी,
देती है आराम सभी को,
लकड़ी की यह राजकुमारी (चारपाई)

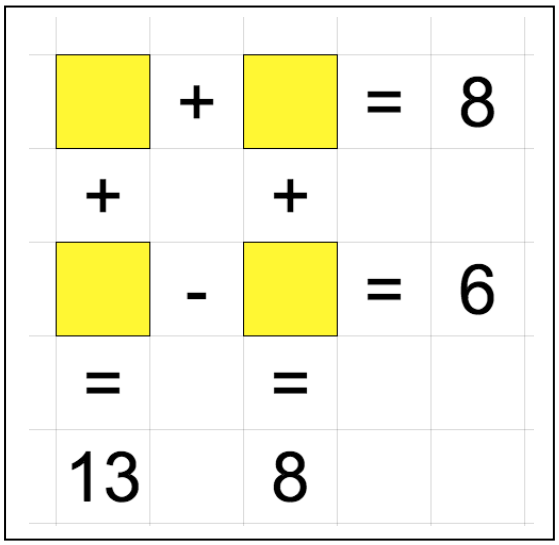

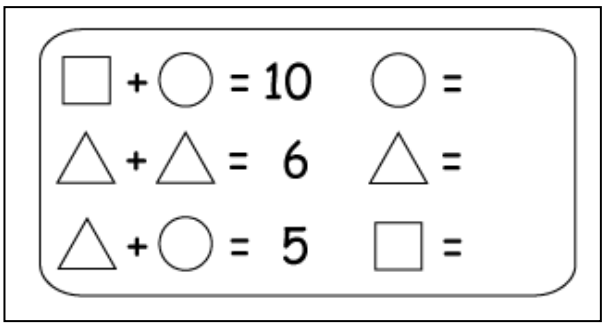

चित्रकला

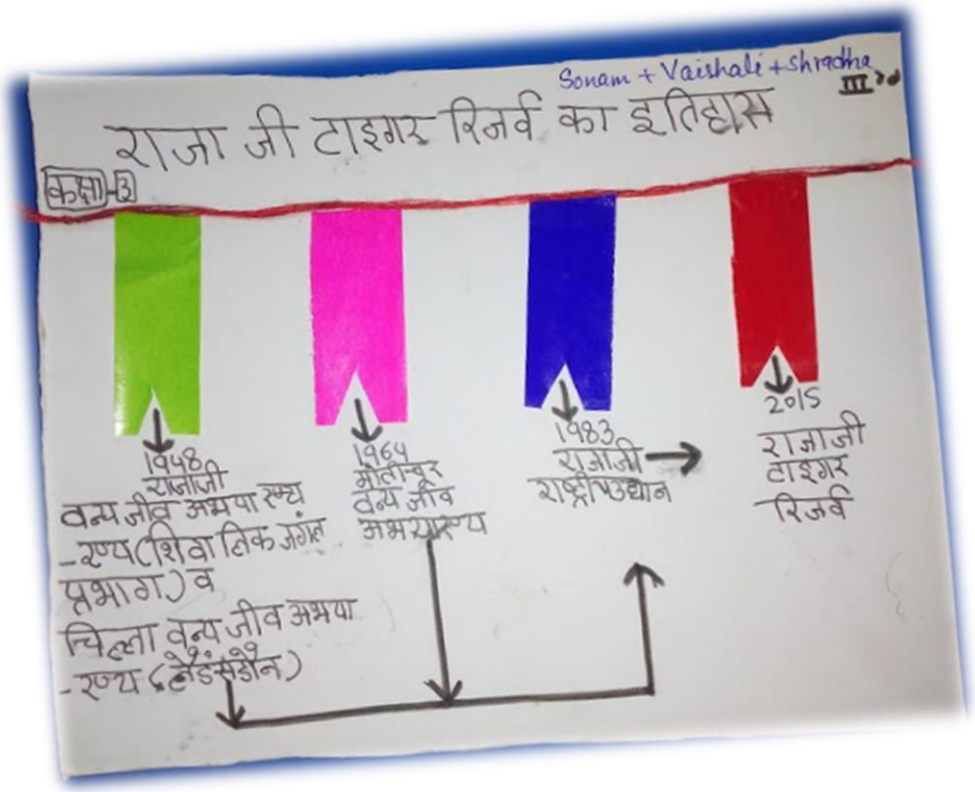

Sonam + Vaishali + Shradha
III
राजा जी टाइगर रिजर्व का इतिहास
कक्षा-3
1948
राजाजी
वन्य जीव
1964
मोतीचूर
वन्य जीव
1983
राजाजी
राष्ट्रीयउद्यान
2015
राजाजी
टाइगर
रिजर्व

18

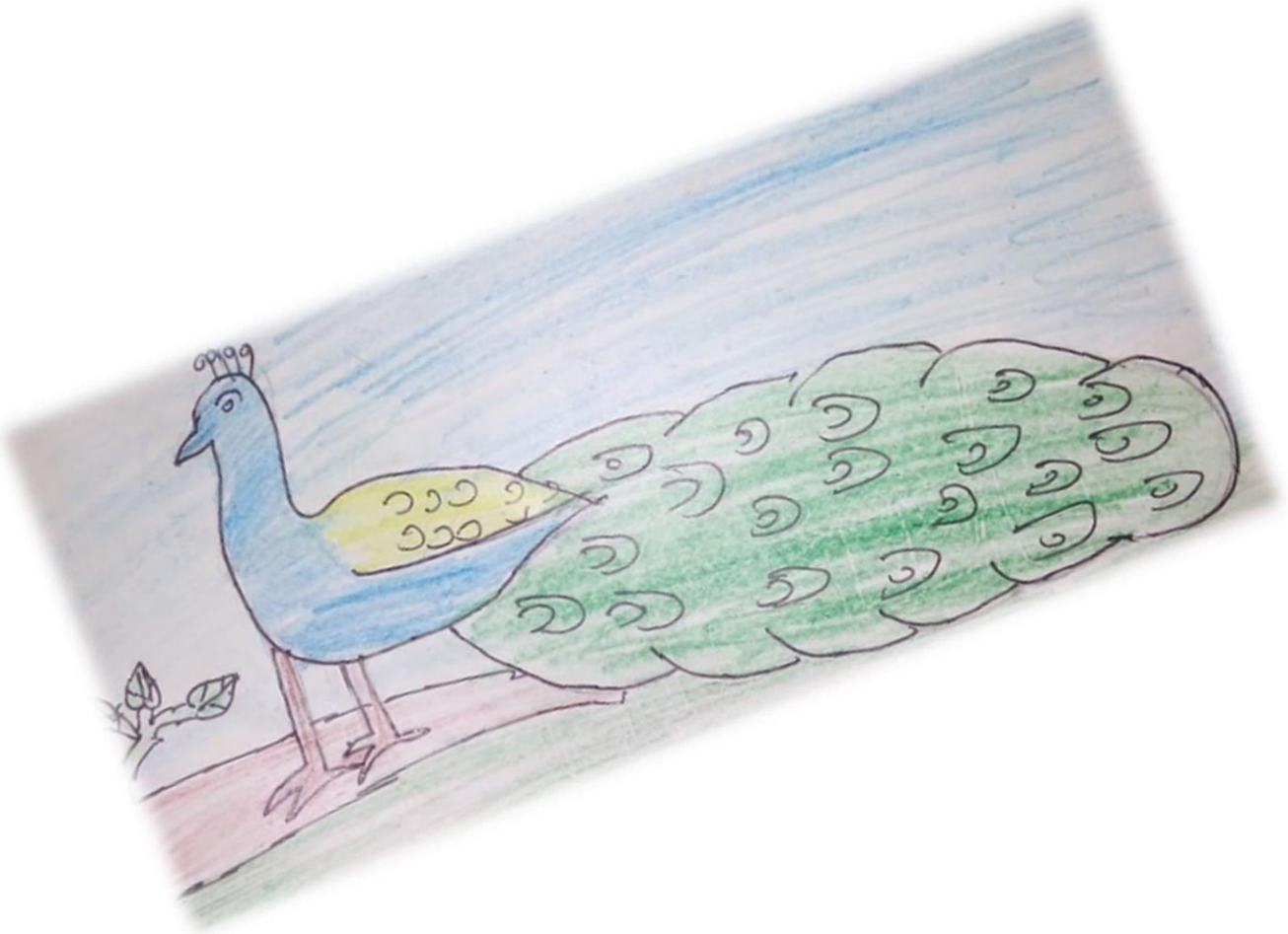

अध्यापक परिशिष्ठ

पर्यावरण

आशा बिष्ट– रा आ प्रा वि गंगा भोगपुर

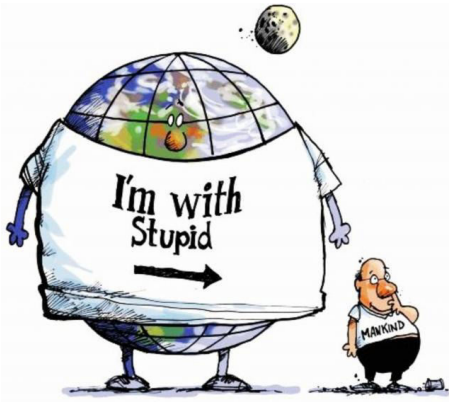

थैली फेंको रैपर फेंको
जल्दी फेंको करो ना देर
बन ना जाए पहाड़ सा ढेर
तुम चाहे तो कर सकते हो
इन चीजों से बड़ा कमाल
बना सकते हो खेल खिलौने
और लगा सकते हो स्टाल

आवाज

अनुराधा रयाल

ध्यान लगाकर सुनती हूँ तो
आवाज मुझे ये आती है
कभी माँ की चूड़ी की छन-छन
कभी मंद पवन की सन-सन
दिल डर जाता है सुनकर आसमान की गड-गड
तभी सुनती हूँ दादी की बड-बड
करती खट-खट दादाजी की लाठी
गर्र-गर्र करती आटा चक्की
टन-टन बजती स्कूल की घंटी
धम-धम दौड़ते राजू बंटी.

बन्दर

माधुरी काला– रा प्रा वि मराल

'ब' से देखो आया बन्दर

बन्दर भागा घर के अंदर
उसने केले तीन उठाए
छील-छील कर तीनों खाए

गिनती

रत्ना गौड़

एक नाव में थे दो नाविक, और तीन पतवार;
आसमान में नीली पीली, उडती चिड़िया चा
पांच मेंढक नाव के आगे, देखो रहे हैं तैर;
उनके पीछे केकड़ा, देखो उसके हैं छह पैर;
सात मछलियां पानी में, बार-बार गोता हैं ख
आठ डालियाँ काई की, झूम-झूम लहराती;
चुन्नी हो गयी नौ साल की, रोज वो गाना गा
नौ के बाद आये दस, कविता हो गयी पूरी बस.

बेटी

कमला रावत

नन्ही-नन्ही कलियाँ हम,
नये-नये फूल खिलाएंगे हम,
शिक्षक का हो साथ हमारा,
जग में होगा नाम हमारा,
बेटा-बेटी एक समान,
पूरी शिक्षा पूरा ज्ञान,

देश बनेगा तभी महान,
जब देंगे इनको सम्मान.

काश हमारे पंख होते

जय प्रकाश शाह – रा प्रा वि पटना

काश हमारे पंख होते
दूर गगन तक हम जाते
कौआ चील कबूतर भी
हमारे मित्र बन जाते.
काश हमारे पंख होते
तो स्कूल उड़ कर आते
बादलों के साथ-साथ
नील गगन को छू आते
चंदा के गाँव पहुँचते
हंस खेलकर वापस आते.
काश हमारे पंख होते
तो पैदल चलने से बच जाते
जैसे ही छुट्टी होती
फुर से उडकर घर पहुँच जाते.

नानी

मनोज काम्बोज – रा प्रा वि कुमार्था

नानी से अब कोई सुनता नहीं कहानी
मोबाईल के आने से हुई रिटायर नानी
अब कहानी अपनी किसे सुनाये नानी
टी.वी. को हम भी देंखे, खुद भी देखे नानी.

बादलों की गूँज

रामेश्वरी रावत – रा प्रा वि भौन

बादलों की गूँज से,
लगता है मुझको डर
छोड़-छाड़ कर खेल खिलौने ,
सीधे भागूं घर.

छाए बादल

हेमलता काला

आसमान में छाए बादल,
सफ़ेद-काले-भूरे बादल,
घुमड़-घुमड़ कर आते बादल,
आपस में टकराते बादल,
आसमान में गूंज-गूंजकर,
हम सबको डराते बादल.

आपदा

रेखा पुरोहित– रा आ प्रा वि गंगा भ

बादलों की गूँज, जब भी सुनाई देती;
मन है घबराता, वह रात है याद आती;
भयंकर हुआ था धमाका, जब था जग सो
सब कुछ बहा ले गया, सब कुछ था मैंने र

आज भी दहशत होती, जब ये आवाज आती;
सारा दृश्य पुनः मेरे, मन को है दहलाती.

झम-झम बूँदें

अंजना रतूड़ी – रा प्रा वि कोटा

हुई गर्जना गड-गड करके, धक-धक मेरा दिल घबराया;
घर से बाहर आकर देखा, आसमान में बादल छाया;
झम-झम, झम-झम बूँदें बरसे, मन को मेरे हर्षाती;
अम्मा मै भी बाहर भीगूँ, बारिश मुझको बहुत है भाती.

मेरी पेंसिल

धनेश्वरी रतूड़ी - रा आ प्रा वि गंगा भोगपुर

लाल रंग की मेरी पेंसिल
लम्बी और नुकीली पेंसिल
लिखने में है सबसे आगे
कापी पर है सरपट भागे
तुम भी ऐसी पेंसिल लाओ
अच्छे अक्षर तुम बनाओ
पढ़-लिखकर तुम कुछ बन जाओ
जग में अपना नाम कमाओ.

विद्यालय की गतिविधियाँ

एक पृथ्वी कार्यक्रम के दौरान अध्यापक प्रशिक्षण में

पतंजलि योग संस्थान हरिद्वार द्वारा योगाभ्यास

उड़ान कार्यक्रम में विज्ञान व गणित प्रतिदर्श

महानिदेशक विद्यालयी शिक्षा का विद्यालय परिसर में स्वागत

खंड शिक्षा अधिकारी महोदय द्वारा गणवेश वितरण

महानिदेशक विद्यालयी शिक्षा द्वारा एक पृथ्वी कार्यक्रम हेतु

WWF भारत द्वारा आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते छात्र-छात्राएं

संकुल स्तरीय क्रीडा प्रतियोगिता में प्रतिभाग - संकुल केंद्र नीलकंठ

विद्यालय में बुद्धि शुद्धि यज्ञ का आयोजन

अध्यापन में नवाचार

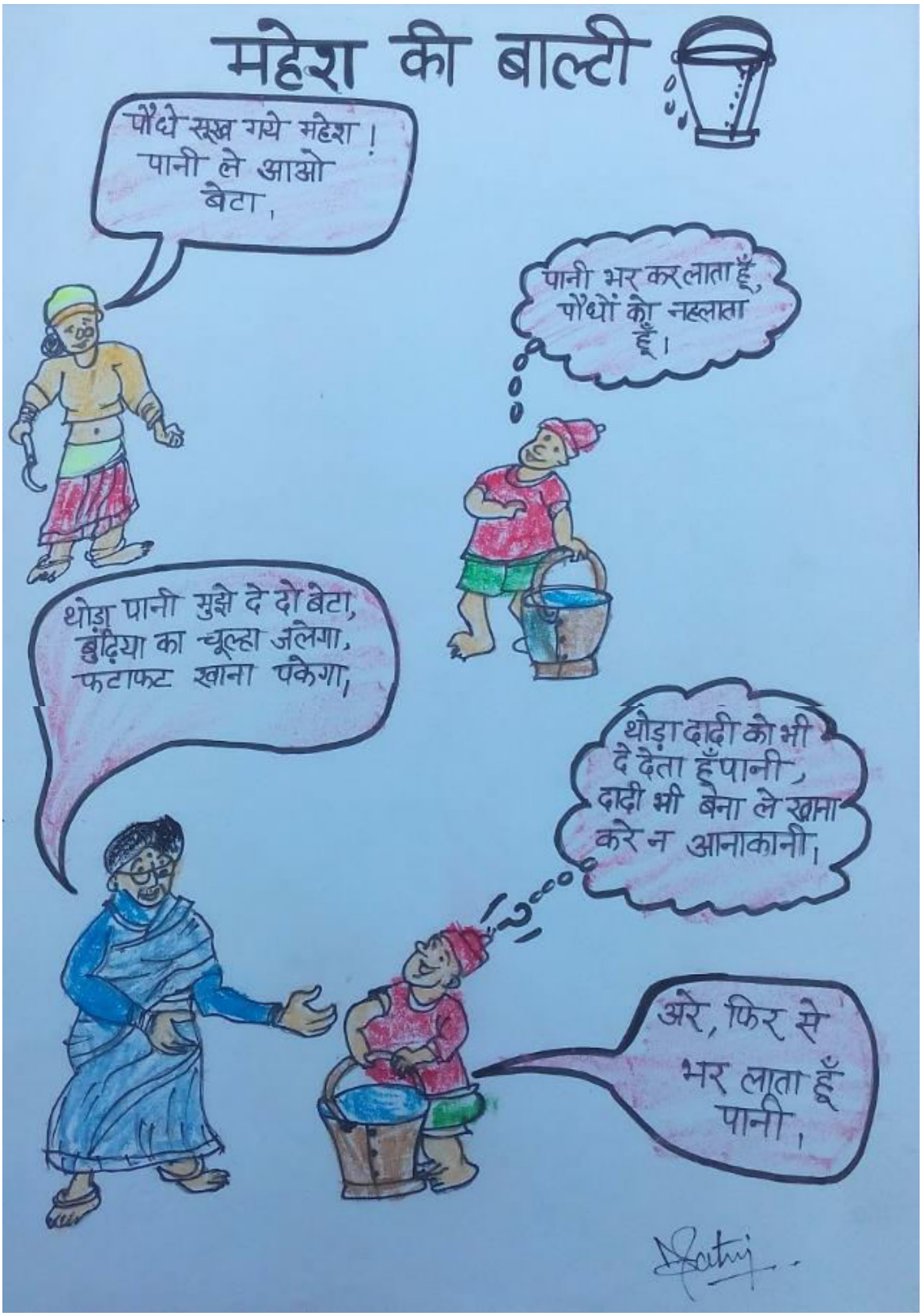
महेश की बाल्टी
पौधे सूख गये महेश ! पानी ले आओ बेटा,
पानी भर कर लाता हूँ, पौधों को नहलाता हूँ।
थोड़ा पानी मुझे दे दो बेटा, बुढ़िया का चूल्हा जलेगा, फटाफट खाना पकेगा,
थोड़ा दादी को भी दे देता हूँ पानी, दादी भी बना ले खाना करे न आनाकानी,
अरे, फिर से भर लाता हूँ पानी,

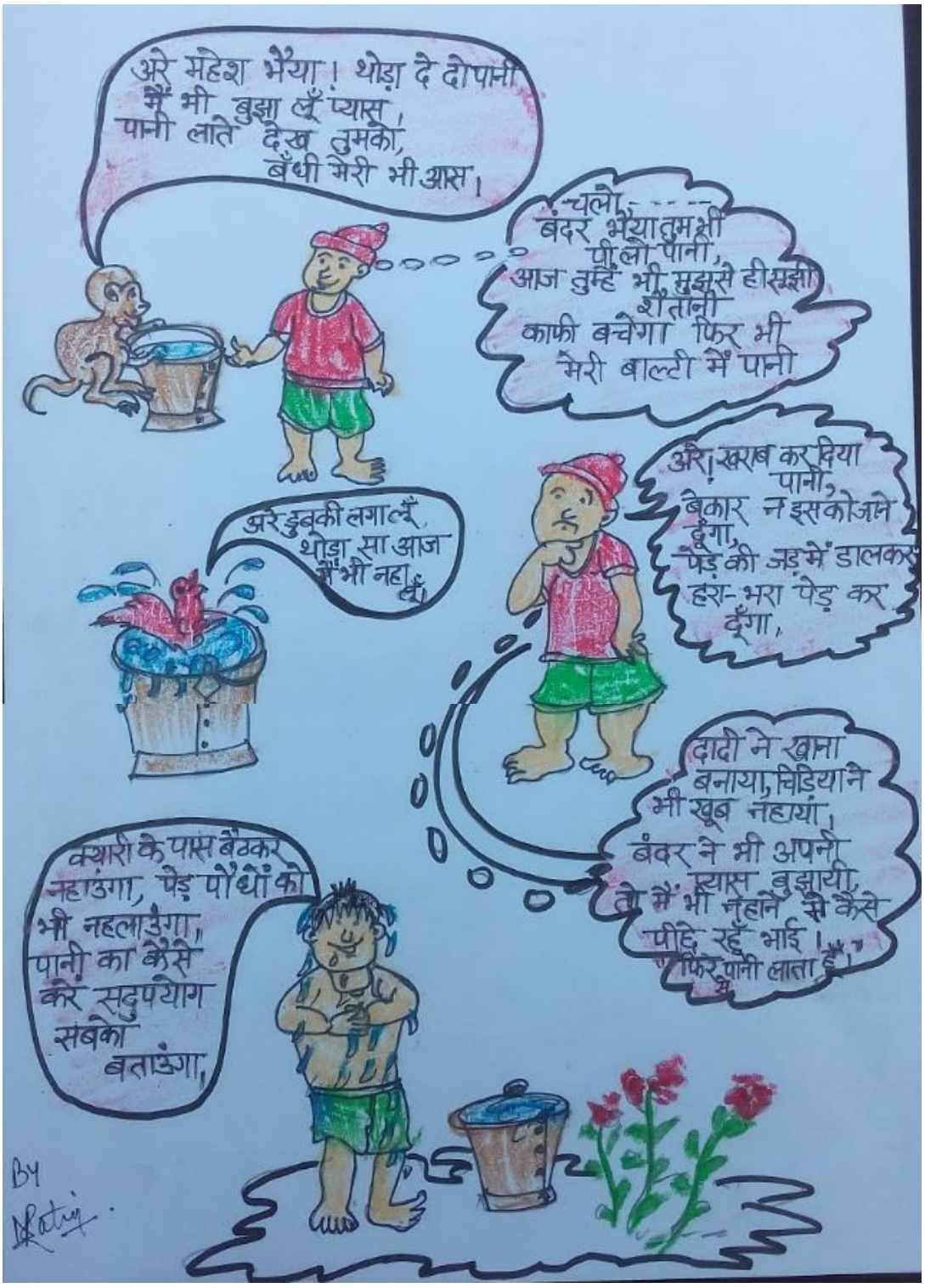
अरे महेश भैया! थोड़ा दे दो पानी
मैं भी बुझा लूँ प्यास,
पानी लाते देख तुमको,
बँधी मेरी भी आस।
चलो, बंदर भैया तुम भी
पी लो पानी,
आज तुम्हें भी मुझसे ही सही
शैतानी
काफी बचेगा फिर भी
मेरी बाल्टी में पानी
अरे! खराब कर दिया
पानी,
बेकार न इसको जाने
दूंगा,
पेड़ की जड़ में डालकर
हरा-भरा पेड़ कर
दूंगा,
अरे डुबकी लगा लूँ,
थोड़ा सा आज
मैं भी नहा लूँ,
दादी ने खाना
बनाया, चिड़िया ने
भी खूब नहाया,
बंदर ने भी अपनी
प्यास बुझायी,
तो मैं भी नहाने से कैसे
पीछे रहूँ भाई।
फिर पानी लाता हूँ।
क्यारी के पास बैठकर
नहाऊंगा, पेड़ पौधों को
भी नहलाऊंगा,
पानी का कैसे
करें सदुपयोग
सबको
बताऊंगा,
By

[1] घं	टा				[13] बा	
		[6] उ	न	ती	स	
	[7] 3		[9] 3	[2] सा	ठ	
[3] 3	6	[11] 5	6		[12] सा	
[4] 6	0	2	[10] 6	[8] ती	त	
[5] 3	0		0	न		

बांये से दांये

(1) घडी में सबसे छोटी सुई होती है। (शब्द) –

(2) एक मिनट में कितने सेकण्ड होते हैं। (शब्द) –

(3) एक वर्ष में दिन होते हैं (अंक) –

(4) एक घण्टे में कितने मिनट होते हैं (अंक) –

(5) अप्रैल माह में दिनों की संख्या (अंक) –

(6) लीप वर्ष में फरवरी माह में कितने दिन होते हैं (शब्द) –

ऊपर से नीचे

(7) एक घण्टे में कितने सेकण्ड होते हैं (अंक) –

(8) साधारणतया घड़ी में सुईयों की संख्या है (शब्द) –

(9) लीप वर्ष में दिनों की संख्या होती है (अंक) –

(10) 5 दर्जन = ... (अंक)

(11) 1 वर्ष = __ सप्ताह (अंक)

(12) 1 सप्ताह = __ दिन (शब्द)

(13) 31 × 2 = __ (शब्द)

पहेलियों द्वारा समय की समझ

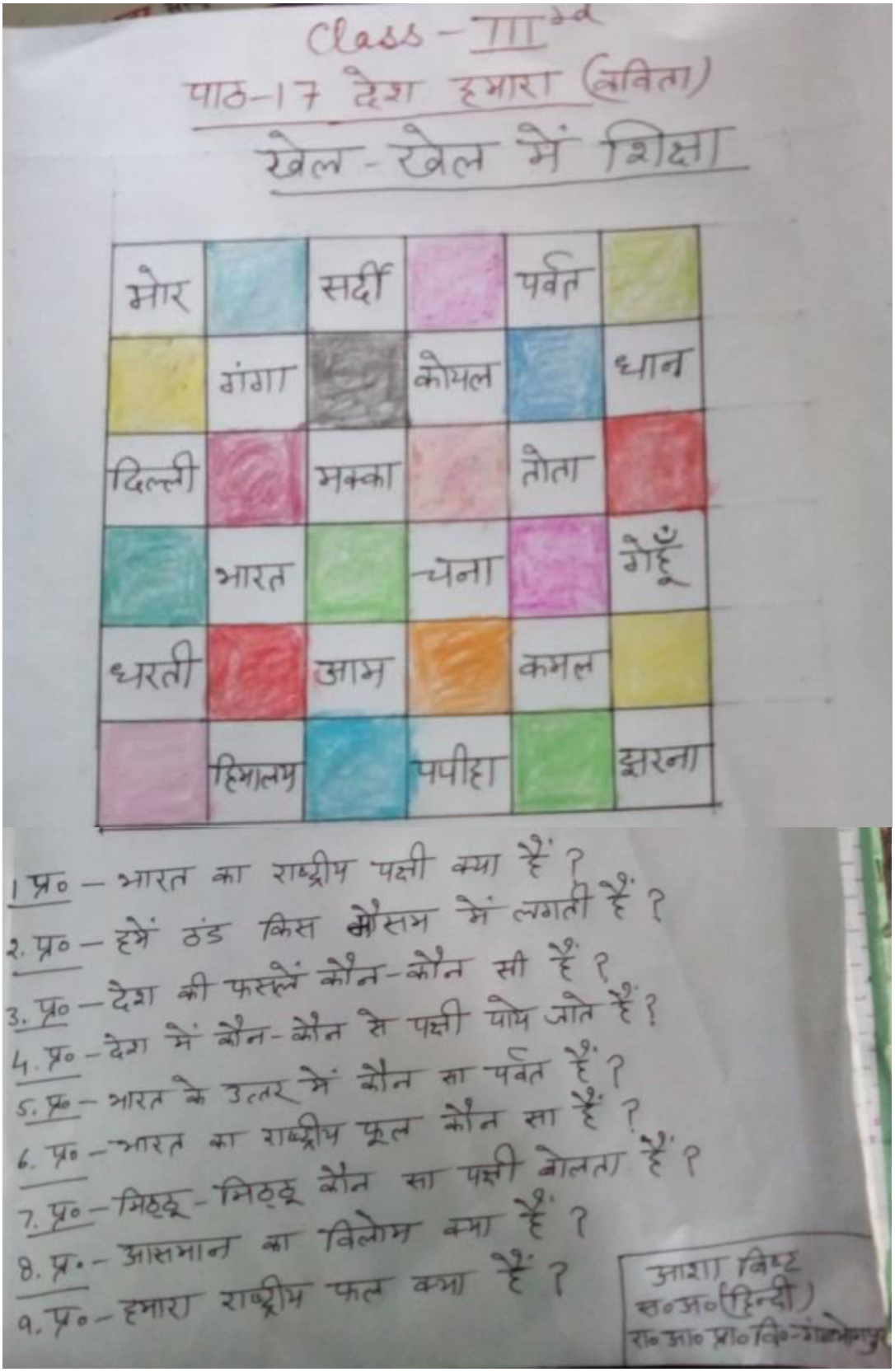

Class – III rd

पाठ–17 देश हमारा (कविता)

खेल - खेल में शिक्षा

मोर		सर्दी		पर्वत	
	गंगा		कोयल		धान
दिल्ली		मक्का		तोता	
	भारत		चना		गेहूँ
धरती		आम		कमल	
	हिमालय		पपीहा		झरना

1. प्र० – भारत का राष्ट्रीय पक्षी क्या हैं?
2. प्र० – हमें ठंड किस मौसम में लगती हैं?
3. प्र० – देश की फसलें कौन-कौन सी हैं?
4. प्र० – देश में कौन-कौन से पक्षी पाये जाते हैं?
5. प्र० – भारत के उत्तर में कौन सा पर्वत हैं?
6. प्र० – भारत का राष्ट्रीय फूल कौन सा हैं?
7. प्र० – मिठ्ठू-मिठ्ठू कौन सा पक्षी बोलता हैं?
8. प्र० – आसमान का विलोम क्या हैं?
9. प्र० – हमारा राष्ट्रीय फल क्या हैं?

आशा बिष्ट
स०अ०(हिन्दी)
रा०आ०प्रा०वि०-गंगाभोगपुर

Peter Pan

छात्र उपलब्धि

ISHITA RANAKOTI

SCORE: 100%

ANURAG & UJJWAL

SCORE: 98.6%

SONAM RAWAT

SCORE: 97.14%

SHIVANSHU

SCORE: 86.9%

RISHABH KANDWAL

SCORE: 93.14%

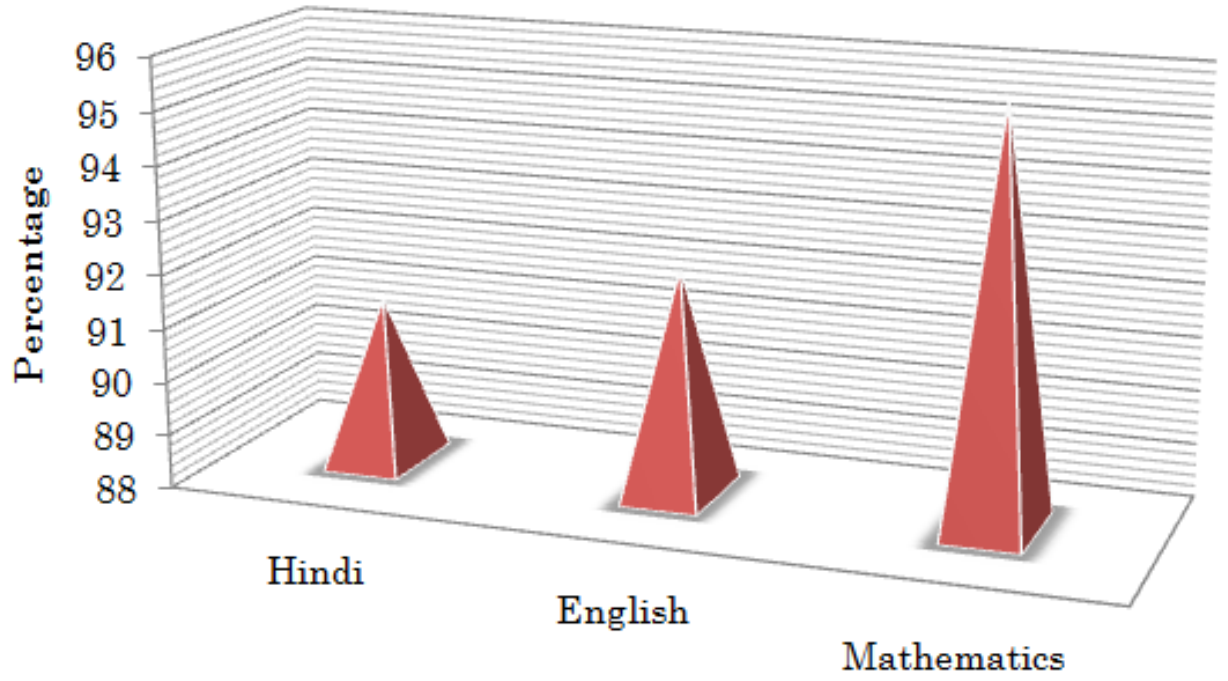

Half Yearly Performance of Grade I

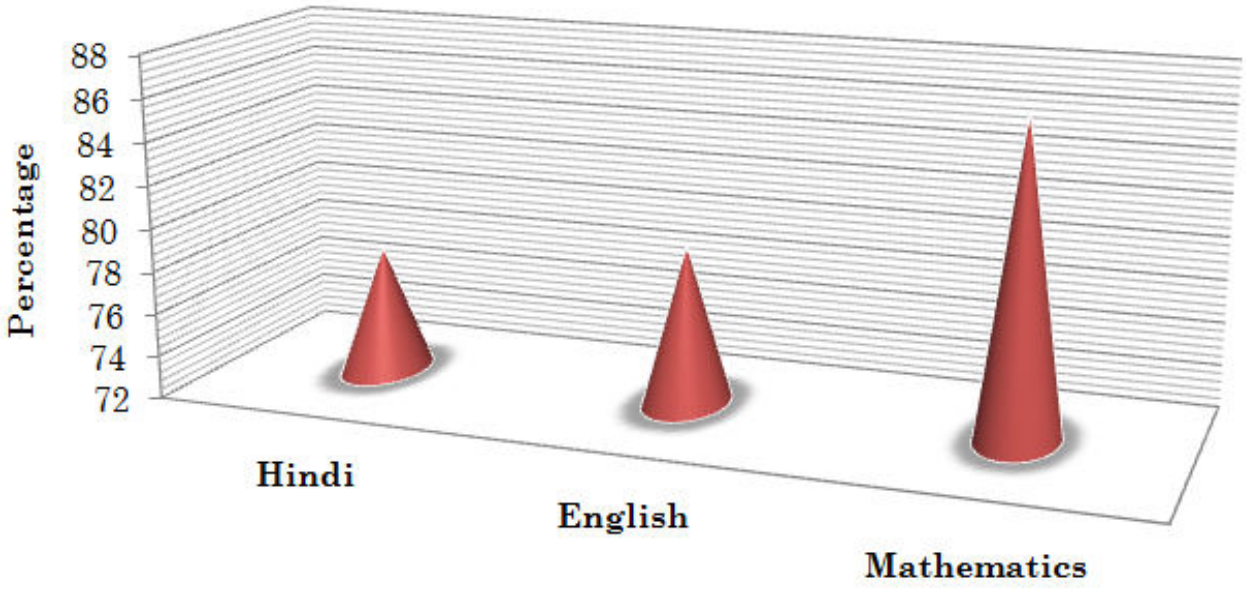

HalfYearly Performance of Grade 2

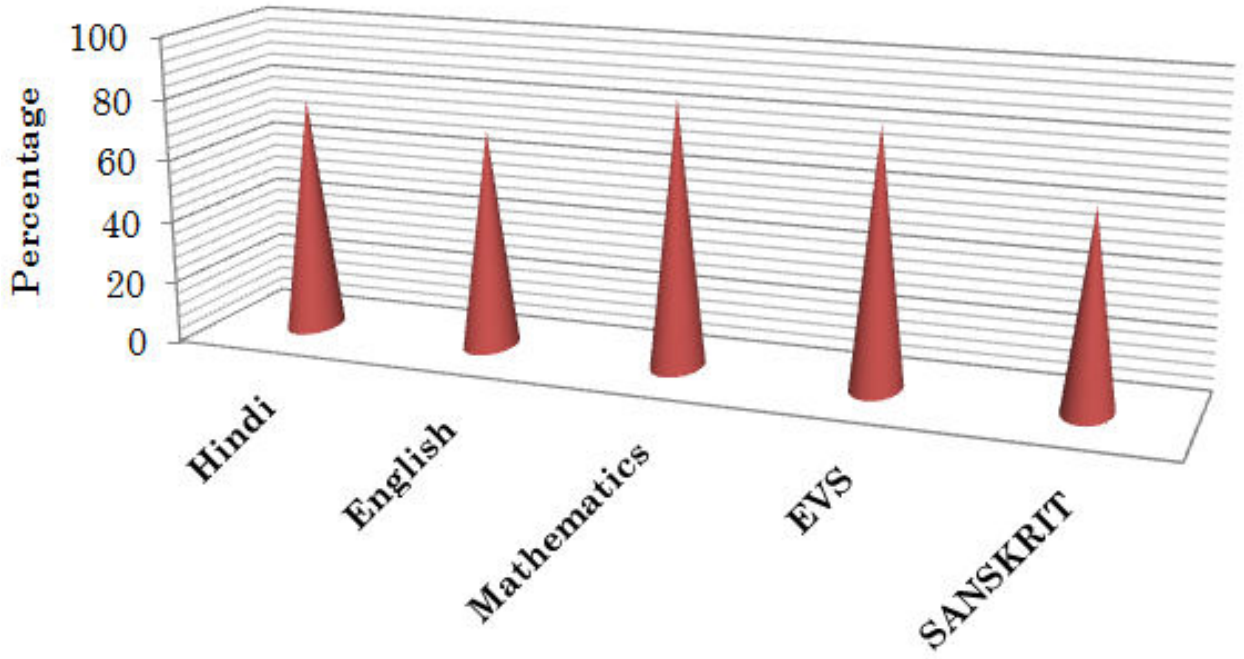

Half Yearly Performance of Grade 3

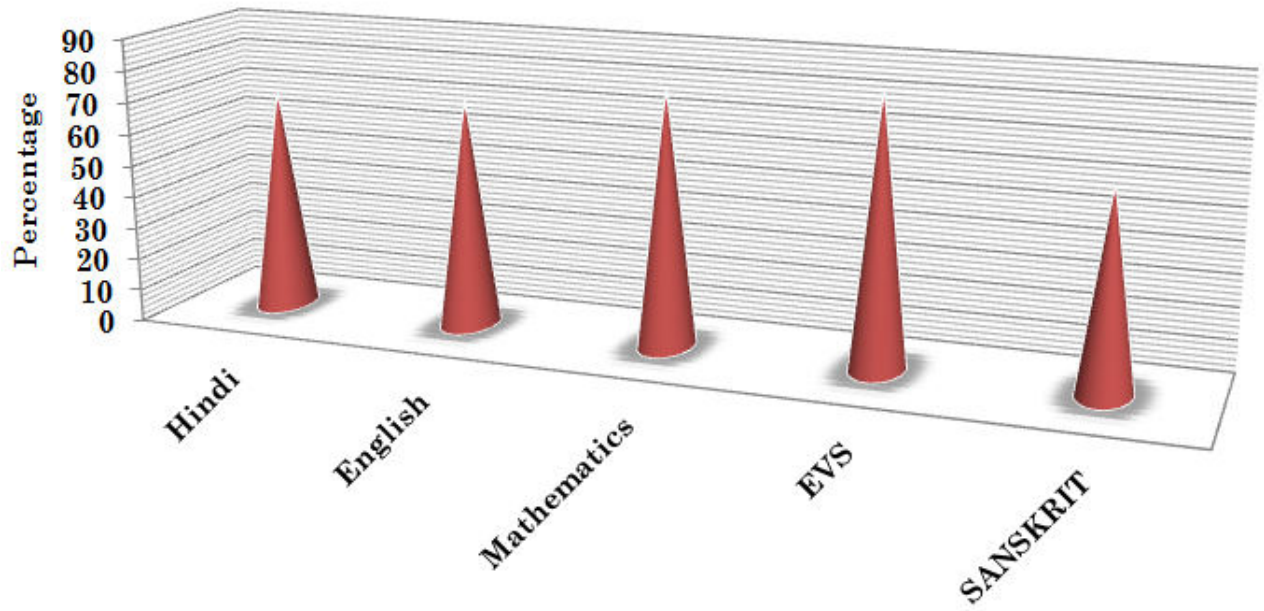

Half Yearly Performance of Grade 4

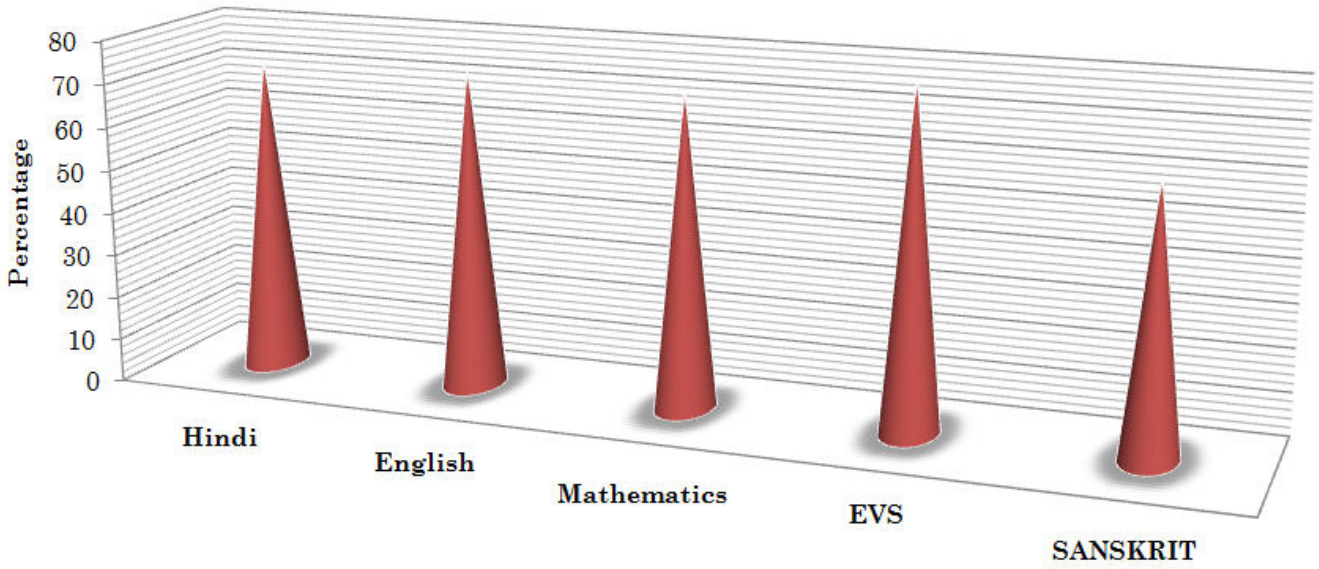

Half Yearly Performance of Grade 5

Contact

Government Model Primary School Ganga Bhogpur

PO Ganga Bhogpur Malla, Yamkeshwar

Pauri Garhwal – 249306

gmpsgbm@gmail.com (E) | www.gmpsgbm.wixsite.com/gmpsgb (W)